Research scholar: Aarti Sethi
Supervisor : Dr. Mukesh Kumar Mirotha
Department: Hindi
Title : Qasbai jeewan ke sandarbh me Hridyesh ke katha sahitya ka Adhyan
Notification No: 508/2022
Date of Notification: 28/02/2022

पाँच बीज शब्द

- कस्बा
- कस्बाई-जीवन
- हृदयेश
- कथा-साहित्य
- शिल्प

संक्षिप्त शोध-सार

भारत गाँवों का देश है जहाँ, कस्बों का एक लंबा इतिहास रहा है। अर्थात कस्बों की अवधारणा किसी न किसी रूप में दीर्घकाल से उपस्थित रही है। परन्तु भारत में अंग्रेजी साम्राज्यवाद का उदय, इस संदर्भ में विशेष स्थान रखता है। भारत में अंग्रेजों ने अपने वैयक्तिक हितों की पूर्ति हेतु एक नए, अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों के प्रबुद्ध वर्ग को जन्म दिया जो वास्तव में अंग्रेजों के हितों को साधने का एक सशक्त माध्यम था। इसे ही मध्यवर्ग या कस्बाई वर्ग कहा गया।

अंग्रेजों द्वारा भारत में औद्योगिक धंधों की शुरुआत के चलते लोग गाँवों से पलायन कर, मजदूरी की ओर आकर्षित होने लगे। यही पलायन, वर्तमान अर्थों में कहे जाने वाले कस्बों की शुरुआत थी। कस्बा एक ऐसी कड़ी है जो गांव को शहर से जोड़ता है। परंतु वास्तविकता यह है कि गांव से एक उज्ज्वल भविष्य की खोज में पलायन करके आया हुआ व्यक्ति वास्तव में न तो गांव को पूरी तरह छोड़ पाता है और न शहरों को पूरी तरह अपना पाता है। ऐसा व्यक्ति 'कस्बाई' की संज्ञा प्राप्त कर लेता है।

हिंदी साहित्य की दृष्टि से देखें तो प्रेमचन्द से पूर्व गाँव ही, कथा के केंद्र में रहे हैं। देश की स्वाधीनता एक ऐसी विभाजक रेखा है जो समाज व साहित्य को देखने का संपूर्ण दृष्टिकोण परिवर्तित कर देती है। पाठक वर्ग अब कल्पना लोक में विचरण न कर, यथार्थ के धरातल पर टिकना चाहता था। अतः सहज ही था कि लेखन में कस्बा मुखर अभिव्यक्ति पाने लगा।

उत्तर प्रदेश के 'शाहजहांपुर' में जन्मे 'हृदयेश' हिंदी साहित्य के जाने-माने हस्ताक्षर हैं। इनका जीवन सदैव अभावों से ग्रस्त रहा। छह दशकों की दीर्घ अवधि तक हृदयेश, निरंतर अपने छोटे से कस्बे शाहजहांपुर में रहकर ही लेखन कार्य करते रहे। इन्होंने महानगरीय जीवन और उससे जुड़ी समस्याओं से संबंधित एक काल्पनिक लेखन करने की अपेक्षा अपने देखे, जिये-भोगे परिवेश को पूरी ईमानदारी और वास्तविकता के साथ चित्रित करने में विश्वास रखा; जिसकी धुरी छोटे शहर या कस्बे हैं। छोटे शहर के आम आदमी की ज़िंदगी की संगति-विसंगतियों को उन्होंने अपने अंदाज़ में प्रभावशाली ढंग से उद्घाटित किया है। कस्बाई निम्न मध्यवर्ग के वर्ग-वैषम्य, शोषण व सामाजिक असमानता का चित्रण उन्होंने अपनी प्रगतिशील विचारधारा के आधार पर किया। उन्होंने समाज में उपेक्षित और निम्न मध्य वर्ग के, हाशिए पर धकेल दिए गए लोगों को अपनी कथाओं का केंद्र बनाते हुए, उपलब्धियों एवं कला विकास की दृष्टि से एक लंबी यात्रा तय की।

हृदयेश के लेखन में निम्न मध्यवर्गीय जीवन और परिवेश इस कदर मुखरित है कि उसे आधार बनाकर इस वर्ग की सोच और मानसिकता को भली भांति समझा जा सकता है। लगभग छह दशकों की दीर्घ अवधि तक निरंतर लेखन करते हुए उन्होंने कस्बे का साथ कभी नहीं छोड़ा। इतनी लंबी यात्रा हृदयेश ने बिना किसी बैसाखी के सिर्फ अपनी रचनात्मकता के सहारे संपन्न की है और यही वह आधार है जो वस्तुतः एक छोटे शहर की सीमा से निकलकर उन्हें अपने समय का एक महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय रचनाकार बनाता है। हृदयेश के लेखन की विशिष्टता यह है कि ये आम आदमी की कहानियां तो हैं परंतु आम आदमी की कहानी के नाम पर निम्नमध्यवर्गीय जीवन की कुंठाओं, पस्ती, हताश और निराशा की कहानियां मात्र नहीं हैं। वे इस वर्ग की संघर्षचेतना, अदम्य जिजीविषा और मूल्यबोध को गहरी सजगता से अंकित करते हैं। इसी बिंदु पर हृदयेश उन कहानीकारों से अलग हो जाते हैं, जिन्होंने आम आदमी की कहानी के नाम पर निम्नमध्यवर्गीय जीवन की हताशा, निराशा और कुंठाओं की कहानियां लिखी हैं। हृदयेश के यहां यह संपूर्ण वर्ग अपनी चेतना, संघर्ष और अदम्य जिजीविषा को गहरी सजगता के साथ लिए दृष्टिगोचर होता है, जो किसी भी कीमत पर जी लेना चाहता है।

निःसन्देह हृदयेश निम्न मध्यवर्गीय जीवन के कुशल चितेरे हैं। इनकी अधिकांश कहानियों में कस्बाई मध्यवर्ग के विभिन्न चित्र बहुतायत में उभरते हैं। ये शाहजहांपुर में जन्मे, पले-बढ़े और मृत्युपर्यन्त यहीं रहकर इन्होंने अपना लेखन कार्य किया। यहीं से वे अपने लेखन के लिए आवश्यक हवा, पानी लेते रहे। कहा जा सकता है कि इस मायने में हृदयेश का कथा संसार, उनका नितांत अपना है। कहानियों-उपन्यासों में आये पात्र, स्थितियाँ, घटनाएँ सभी कुछ उनकी अपनी देखी-भोगी हैं और सम्भवतः यही कारण है कि उनपर यदा-कदा 'छोटे शहर का लेखक' होने का ठप्पा लगता रहा है। माना जाता रहा है कि उनके अनुभव मात्र एक कस्बे से सम्बद्ध हैं। कुछ हद तक यह उचित है परंतु हो सकता है कि परिधि-विस्तार से, उनके लेखन में व्याप्त एक विशेष अपनापन, मिट्टी की सोंधी महक छूट सी जाती या शायद कम हो जाती, जो हृदयेश की विशिष्टता है। वास्तव में, ये सभी कहानियाँ कस्बाई जीवन का सामाजिक, आर्थिक इतिहास कहलाने का हक़ रखती हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि कस्बाई जीवन का एक ज्वलंत दस्तावेज हैं।